कुशकण्डिका - पंच भू संस्कार

पंच भू संस्कार

इन्द्र ने बृत्तासुर नामक दैत्य का बध किया उसके मांस और चर्वि से पुरी पृथ्वी व्याप्त हो गयी इसी लिये उपलेपन आदि संस्कार किया जाता है |

१ – परिसमुहन – सर्व प्रथम बेदी या कुण्ड को नाप ले ये २४ अङ्गुल की होनी चाहिये वेदि मे कोई कीटआदि न रह जाय इसके निवारन के लिये तीन कुशोके द्वारा दक्षिण से उत्तर की तरफ़ वेदि को साफ़् करे और उन कुशोको ईशान् कोण मे फ़ेकदे | (**त्रिभिर्दभैः परिसमुह्य तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य**)

मन्त्र

कृष्णो ऽ स्याखरेष्ठो ऽग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वेदिरसि बर्हिषे त्वा जुष्टां प्रोक्षामि बर्हिरसि स्त्रुग्भ्यस्त्वा जुष्टं प्रोक्षामि ॥ **य० २ – १** ॥

२ – उपलेपन – गाय के गोवर मिश्रित जल से वेदि को दक्षिण से उत्तर की तरफ़् लिप दे | (**गोमयोदकेनो पलिप्य**)

मन्त्र

पृथिवि देव यजन्योषध्यास्ते मूलं माहि गुंग सिषं व्रजं गच्छ गोष्ठानं वर्षतु ते द्यौर्बधान देव । **सवितः परमस्यां पृथिव्या गुंग शतेन पाशैर्यो ऽ स्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मस्तमतो मा मौक्** ॥**य० १ – २५** ॥

३ – रेखाकरण – स्रुवा या तीन कुशो द्वारा वेदि या कुण्ड मे ६ – ६ अङ्गुल पर अन्गुठे और तर्जनी के सहारे प्रदेश मात्र (एक बित्ता ६ – ७ इन्च की दुरी को प्रदेश मात्र की दुरी कहते है |) तीन रेखाये पश्चिम से पुरव या द० से उ० की तरफ़् खिचे |(**स्फ़येन्** , **स्त्रुवमुलेन** , **कुशमुलेन वा त्रिरुल्लिखय** |)

मन्त्र

गायत्रेण त्वा छन्दसा परिगृह्णामि त्रैष्टु भेन त्वा छन्दसा परिगृह्णामि जागतेन त्वा छन्दसा परिगृह्णामि ।

सूक्ष्मा चासि शिवा चासि स्योना चासि सुषदा चास्यु र्जस्वती चासि पयस्वीती च ॥ य० १ – २७ ॥

४ – उध्दरण – उन खिची गयी ३ रेखाओ से क्रम से अनामिका और अन्गुठे द्वारा १ – १ बार मिटटी निकाल कर बावे हाथ मे रखते जाये बाद मे दाहिने हाथ पर रख कर ईशानकोण मे फ़ेकदे |(**अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य**)

,**मन्त्र** -

५ – अभ्युक्षण या सेचन – गंगा आदि पवित्र नदिओ के जल से वेदि को पवित्र किया जाता है (वेदि पर जल छिडके) (**जलेना भ्युक्ष्य**)

मन्त्र

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ॥ य० ३६ – १५ ॥

तस्मा ऽ अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥य० ३६ – १६ ॥

ये वेदी के पञ्चभू संस्कार है |

अग्नि – स्थापन

किसी कासे , ताबे या मिट्टी के पात्र मे पवित्र अग्नि को वेदि या कुण्ड के अग्नि कोण मे रखे अग्नि मे से क्रव्यादांश निकाल कर नैऋत्य कोण मे डाल दे तदन्तर अग्निपात्र को स्वाभिमुख करते हुए वेदी मे स्थापित करे –

मन्त्र

ॐ अग्नि दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे । देवाँ२ आ सादयादिह ॥

जिस पात्र मे अग्नि लाई गई हो उसमे अछत – जल छिडकदे अग्नि की सुरक्षाके लिये लकडी , गोइठा आदि रखे यदि अग्नि को जलाने के लिये फ़ुकना हो तो बास की नली या काष्ठ का व्यवधान (मुख और अग्नि के बीच मे दुरी के लिये) कर ले | अग्नि का ५ उपचारो से यथाविधि पूजन कर ले |

कुशकण्डिका प्रारंभ

आचार्य तथा ब्रह्माका वरण

अग्नि के दक्षिण दिशा मे प्रदेश मात्र दुरी पर ब्रह्मा के लिये कुश का आसन रखे अग्नि के उत्तर मे प्रदेश मात्र दुरी पर प्रणीता और प्रोक्षणी पात्र के लिये कुश का दो आसन रखे जिसका अग्र भाग पूर्व की तरफ़ हो | यज्ञ की रक्षा करने वाले ब्राह्मण को ब्रह्मा कहा जाता है | यदि प्रत्यक्ष ब्राह्मन का वरन न करना हो तो ५० कुशो से निर्मित ब्रह्मा को संकल्पपुर्वक वरण करके उत्तरा भिमुख ब्रह्मा के आसन पर स्थापित करे | **कहे – हे ब्रह्मन्, जब तक कर्म की समाप्ति नहो तब तक आप ब्रह्मपद पर आसीन हो** (**यावत्कर्म समाप्यते तावत्त्वं ब्रह्मा भव**) **ब्रह्मा बोले** – (**भवामि**) **मै होता हूँ**- यो कह कर आसन पर बैठे | तदनन्तर - ब्रह्मा मौन हो जाय | हवन के लिये पृथक् आचार्य हो तो पहले उनका संकल्पपुर्वक वरण करले और वरण-सामग्री प्रदान करे |

प्रणीतापात्र – स्थापन

प्रणीतापात्र को बायें हाथ मे रख कर दाहिने हाथ से ग्रहन किये हुए जल पात्र से उस प्रणीतापात्र मे जल भर कर पहले से बिछी हुइ कुशा पर दाहिने हाथ के रखकर उस पात्र को स्पर्श कर ब्रह्मदेव के मुख को देख कर ईक्षण मात्र से ब्रह्मा की आज्ञा ले कर दुसरी उत्तर की तरफ़ बिछि हुइ कुशाओ पर रखदे |

परिस्तरण

यह ८१ कुशो का होता है | कुछ विद्वानो की मान्यता १६ और १२ है परन्तु हमारे गुरुजी की मान्यता ८१ है और गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित पुस्तको मे भी ८१ ही मिला | सर्व प्रथम इसका चार भाग कर ले (२१ + २० + २० + २०) कुश बिछाते समय हाथ खाली नहि होना चाहिये | इसलीये पहले २१ कुशो को ले कर अग्निकोण से ईशानकोण तक उत्तराग्र बिछावे फ़िर् दुसरे भाग को ब्रम्हासनसे अग्निकोण तक पूर्वाग्र बिछाये | तदनन्तर तीसरे भाग को नैऋत्यकोण से वायव्यकोण तक उत्तराग्र बिछाये और चोथे भाग को वायव्यकोण से ईशानकोण तक पूर्वाग्र बिछाये | पुनः दाहिने खाली हाथ से वेदी के ईशानकोण के प्रारम्भकर वामवर्त ईशानपर्यन्त प्रदक्षिणा करे |

पात्रासादन

३ कुश उत्तराग्र (पवित्रक बनाने वाली पत्तिओ को काटने के लिये) साग्र २ कुशपत्त्र (बिचवाली सिंक निकाल कर पवित्रक बनाने के लिये) प्रोक्षणीपात्र (अभाव मे मिट्टी का कसोरा) आज्यस्थाली (घी रखने का पात्र) चरुपात्र के रूप मे मिट्टी के दो पात्र (यदि एक ही पात्र मे बनाना हो तो बडा रहना चाहिये) ५ सम्मार्जन कुश , ७ उपयमन कुश , ३ समिधाये (प्रदेश मात्र लम्बी) स्रुवा , आज्य (घी) , यज्ञीय काष्ठ (पलाश आदि की लकडी) , २५६ मुठ्टी चावल से भरा पूर्णपात्र पूर्णाहुति के लिये नारिकेल आदि हवन सामग्री मगा कर पश्चिम से पूर्व तक उत्तराग्र अथवा अग्नि के उत्तर की ओर पूर्वाग्र रख ले |

पवित्रक निर्माण

२ कुश के पत्रो को बाये हाथ मे पूर्वाग्र रख कर इनके उपर उत्तराग्र ३ कुशो को दाये हाथ से प्रदेश मात्र दुरी छोडकर मूल की तरफ़ रखदे | तदनन्तर २ कुशो के मूल को पकड कुशत्रयको बीचमे लेते हुए दोकुश पत्रो को प्रदक्षिण क्रम से लपेटले, फ़िर दाये हाथ से ३ कुशो को मोडकर बाये हाथ मे पकडले तथा दाहिने हाथ से कुशपत्रद्वय पकडकर जोरसे खीच ले | जब २ पत्तो वाला कुश कट जाय तब उनके अग्रभाग वाला प्रादेशमात्र दाहिनी ओरसे घुमाकर गाँठ दे दे ताकि दो पत्र अलग –अलग न हो | इस तरह पवित्रक बन गया | शेष सबको (२ पत्रो के कटे भाग तथा काटने वाले ३ कुशोको) उत्तर दिशा मे फ़ेक दे |

प्रोक्षणीपात्र का संस्कार

प्रोक्षणी पात्र को पूर्वाग्र अपने सामने रखे | प्रणीता पात्र मे रखे हुए जल का आधा भाग आचमनि आदि किसी पात्र से ३ बार प्रोक्षणी पात्र मे डाले | अब पवित्री के अग्र भाग को बाये हाथ की अनामिका तथा अन्गुठे से पकड कर इसके मध्य भाग के द्वारा प्रोक्षणी के जल को ३ बार प्रदेश मात्र (एक बित्ता) उछाले (**उत्प्लवन**) | तथा प्रणीत के जल से प्रोक्षणी का प्रोक्षण करे और उक्त प्रोक्षणी के जल से वेदी के पास स्थापित सभी वस्तुओ का सिंचन करे (**अर्थवत्प्रोक्ष्य**) फ़िर अग्नि और प्रणीता के मध्य (असंचरदेश) मे प्रोक्षणी पात्र को रख दे | फ़िर घी के कटोरे मे निकाल कर उस पात्र को वेदी के दक्षिण भाग मे अग्नि पर रखे दे |

चरुनिर्माण

अग्नि के पस्चिम दिशा मे चरु स्थाली रख सपवित्र वाली उसमे ३ बार धोवे हुए चावलो को छोड प्रणीता के जल से आसेचन कर उपयुक्त जल को उसमे छोड कर वेदी के उत्तर दिशा मे अग्नि पर रखे (वेदि के दक्षिण घी और उत्तर चारु) |

पर्यग्निकरण

कुश या किसी लकडी को अग्नि मे जलाकर दाहिने हाथ से पकड कर चरुपात्र तथा घी के ईशान भाग से प्रारम्भ कर ईशान भाग तक दाहिनी ओर से घुमाये | उस जलति हुइ लकडी को अग्नि मे छोड दे | फ़िर खाली हाथ बायीं ओर से ईशान भाग से घुमाना प्रारम्भ कर ईशान भाग तक ले आये |

स्रुवाका सम्मार्जन

जब घी अधा पिघल जाय तब दाये हाथ मे स्रुवाको पूर्वाग्र तथा अधोमुख लेकर आगपर तपाये | पुनः स्रुवाको बाये हाथ मे पूर्वाग्र ऊर्ध्वमुख रख कर दाये हाथ से सम्मार्जन कुशा (५ कुश जो अग्नि के उत्तर रखा गया है) के अग्रभाग से स्रुवाके अग्रभाग का , कुशके मध्यभाग से स्रुवा के मध्यभाग का और कुशके मूल भाग से स्रुवाके मूल भाग का स्पर्श करे अर्थात स्रुवा का सम्मार्जन करे | प्रणीता के जल के स्रुवा का प्रोक्षण करे | इसके बाद सम्मार्जन कुशाको अग्निमे डाल दे | फ़िर अधोमुख स्रुवा को पुनः अग्नि मे तपाकर अपनी दाहिनी ओर किसी पात्र या कुशोंपर पूर्वाग्र रख दे |

घृत पात्र तथा चरुपात्र का स्थापन

घी के पात्र को अग्नि से उतार कर चरुपात्र के पश्चिम भाग से होते हुए पूर्व की ओरसे परिक्रमा करके अग्नि – के पश्चिम भाग मे उत्तरकी ओर रख दे तदनन्तर चरुपात्र को भी अग्नि से उतार कर वेदी के उत्तर रखे हुए आज्यस्थाली के पश्चिम से ले जा कर उत्तरभाग मे रख दे |

घृत का उत्प्लवन

प्रोक्षणी पात्र मे रखि हुई पवित्री को ले कर उसके मूल भाग को दाहिने हाथ के अंगुठे तथा अनामिका से पवित्री के अग्रभाग को पकड कर कटोरे के घृत को तीन बार उपर उछाले | घृत का अवलोकन करे और यदि घृत मे कोइ विजातीय वस्तु हो तो निकाल कर फ़ेक दे | तदनन्तर प्रोक्षणी के जलको तीन बार उछाले और पवित्री को पुनः प्रोक्षणी पात्र मे रख दे | स्रुवासे थोडा घृत चरु मे डाल दे |

तीन समिधाओंकी आहुति

ब्रह्मा से कुशा द्वारा संबन्ध बना ले बायें हाथ मे उपयमन कुशा को ले कर (७ कुश जो उत्तर मे रखा है |) हृदयमें बाये हाथ से सटाकर तीन समिधाओंको घीमें डुबोकर मनमे प्रजापतिदेवता का ध्यान करते हुए खडेहोकर मौन हो अग्निमें डाल दे | अब बैठ जाय |

पर्युक्षण (जलधर देना)

पवित्रक सहित प्रोक्षणी पात्र के जल को दाये हाथ की अञ्जलि (चुल्लु) मे ले कर अग्नि के ईशान कोण से ईशान कोण तक प्रदक्षिण क्रम से जलधारा दे | पवित्रक को बाये हातः मे ले कर फ़िर् दाहिने खाली हाथको उलटे अर्थात ईशान कोण से उत्तर होते हुए ईशान कोण तक ले आये (**इतरवृत्तिः**) और पवित्रक को दाये हाथ से लेकर प्रणीता मे पूर्वाग्र रख दे | उपयमन कुशा को हृदय से स्पर्स किये हुए दाहिने हाथ से स्रुवा के मूल से चार अंगुल छोड कर ' संखमुद्रा ' से स्रुवा को पकड कर प्रदीप्त अग्नि मे हवन करे |

हवन विधि

दाहिना घुटना मोड कर (दाहिने घुटने को पृथ्वी पर लगाले) वायव्य कोण से प्रारम्भ कर अग्निकोण पर्यन्त या पूर्व दिशा की तरफ़ निरन्तर घी कि धारा द्वारा प्रजापति देवता का मन मे ध्यान करते हुए स्रुवा से चुप चाप शेष के सहित हवन करे | इसमे स्वाहाकार नही है |

(**१**) **ॐ प्रजापतये स्वाहा** , **इदं प्रजापतये न मम** ' इस वाक्य का यजमान त्याग करे | होम त्याग के बाद स्रुवा मे बचा घी प्रोक्षणी पात्र मे प्रक्षेप (छोड दे) करे |

आगे की तीन आहुतियाँ इस प्रकार बोल कर दे |

(**२**) **ॐ इन्द्राय स्वाहा** , **इदं इन्द्राय न मम** , निर्ऋतिकोण से आरम्भ कर ईशान कोण पर्यन्त या पूर्व ओर आहुति दे | (स्रुवा मे बचा घी प्रोक्षणी पात्र मे प्रक्षेप (छोड दे) करे|)

(**३**) **ॐ अग्नये स्वाहा** , **इदं अग्नये न मम** , कहकर वेदी या कुण्ड उत्तरपूर्वार्ध मे आहुति दे | (स्रुवा मे बचा घी प्रोक्षणी पात्र मे प्रक्षेप (छोड दे) करे |)

(**४**) **ॐ सोमाय स्वाहा** , **इदं सोमाय न मम** ,कहकर वेदी या कुण्ड के दक्षिणपूर्वार्धभाग मे आहुति दे |(स्रुवा मे बचा घी प्रोक्षणी पात्र मे प्रक्षेप (छोड दे) करे |)

द्रव्यत्याग

हाथ मे जल लेकर यजमान त्याग करे | क्योकि बहुकर्तृक हवन मे यथा समय प्रति आहुति के बाद प्रोक्षणी पात्र मे त्याग करना असम्भव है | अतः सब हवनीय द्रव्य तथा देवताओ को मन से ध्यान कर , **इदमुपकल्पितं समितिलादिद्रव्यं या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्त न मम** , इस वाक्य को पढकर जल को भूमि पर गिरा दे | '**यथादैवतमस्तु** ' ये कहे | तदनन्तर गन्ध , अछत , पुष्प आदि उपचारोंसे अग्निका पूजन करे –

वराहुति

गणपति और अम्बिका को दी गयी आहुति ' वराहुति ' कहलाति है –

गणपति के लिये

ॐ गणानां त्वा गणपति ग्वं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ग्वं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ग्वं हवामहे वसो मम | आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ||

अम्बिका के लिये

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन | ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पिलवासिनीम् ||

SANKARSHAN PATI TRIPATHI SO RAMASHANKAR PATI TRIPATHI MO 9452111037/9936226437/9616948546